डॉ. गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक

पूनम सिन्हा

डॉ० गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

सह-संपादक
डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

प्रतिभा प्रकाशन

ISBN : 978-81-941225-8-6

प्रथम संस्करण

2020

सर्वाधिकार ©

संपादकाधीन

प्रकाशक

प्रतिभा प्रकाशन

केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिस के पास)

मुजफ्फरपुर-842001

फोन : 9955658474, 9572980709

अक्षर-संयोजन

अमित कुमार कर्ण

आवरण

शशिकांत सिंह

मुद्रक

जी० एस० ऑफसेट, दिल्ली

मूल्य

350.00 (तीन सौ पचास रुपये)

Dr. Gopal Rai Aur Hindi Kathalochana

Rs. 350.00

अनुक्रम

संपादकीय		7
धरोहर :		
भाषा चिन्तन : शुद्ध भाषा की खोज	**गोपाल राय**	–13
स्मृति-शेष बंधुवर	**निर्मला जैन**	–22
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी: डॉ० गोपाल राय	**हरदयाल**	–27
समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास का इतिहास	**मैनेजर पाण्डेय**	–34
विद्धांग–बद्ध–कोदण्ड–मुष्टि–खर रुधिर-स्राव	**सत्यकाम**	–41
उपन्यास की संरचना : संदर्भ-प्रेमचंद के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–54
हिन्दी कहानी का इतिहास-2 साहित्य भी इतिहास भी	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–65
इतिहासकार गोपाल राय	**अमिता पाण्डेय**	–71
आलेख :		
कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रेवती रमण**	–77
डॉ० गोपाल राय की कथालोचना	**डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह**	–81
नलिनविलोचन शर्मा एवं गोपाल राय की साहित्यदृष्टि : संदर्भ-गोदान	**डॉ. सुधा बाला**	–85
हिन्दी उपन्यासालोचन के हिमालय : डॉ० गोपाल राय	**डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय**	–93
गोपाल राय की सृजनात्मकता: कथालोचना की विस्तृत भूमि	**डॉ. संजय पंकज**	98
हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. त्रिविक्रम ना.सिंह**	102
उपन्यास की संरचना और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रामेश्वर द्विवेदी**	109

गोपाल राय : एक दृष्टि **डॉ. राजीव कुमार झा** 116

शेखर : एक जीवनी और गोपाल राय की विवेचना **डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय** -121

मैला आँचल की आलोचना:
डॉ० गोपाल राय **डॉ. कल्याण कुमार झा** 133

उपन्यास आलोचना की परंपरा और गोपाल राय **डॉ. संत साह** 137

मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की
पहचान : डॉ० गोपाल राय **डॉ. साक्षी शालिनी** –140

साहित्येतिहास-लेखन की कठिनाइयाँ और
डॉ० गोपाल राय **डॉ. राकेश रंजन** –144

डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल में
स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति **डॉ. सुशांत कुमार** –153

डॉ० गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना
का अनुशीलन **डॉ. संध्या पाण्डेय** –157

आंचलिक उपन्यास की अवधारणा और गोपाल राय **डॉ. चित्तरंजन कुमार** –163

उपन्यास शिल्प और गोपाल राय का विवेचन **सोनल** –170

गोदान की आलोचना प्रक्रिया और कथालोचक
गोपाल राय **अखिलेश कुमार** –176

हिन्दी उपन्यासालोचन और डॉ० गोपाल राय **डॉ. माधव कुमार** –180

कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय **डॉ. पल्लवी** –185

डॉ० गोपाल राय : समीक्षा और साहित्याब्दकोश **समीक्षा सुरभि** –188

कथालोचक डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में
विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ **डॉ. प्रीति कुमारी** –200

डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की
भाषागत विशिष्टता **डॉ. इंदिरा कुमारी** –205

हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय **पल्लवी कुमारी** –211

उपन्यास की पहचान मैला आँचल के संबंध
में गोपाल राय की विवेचना **डॉ. अंशु कुमारी** –216

हिन्दी कहानी का इतिहास और डॉ० गोपाल राय **विकास कुमार** –220

संस्मरण :

मैं और गोपाल राय **उषाकिरण खान** –225

इतिहासकार-कोशकार डॉ० गोपाल राय :

एक संक्षिप्त परिचय — भगवानदास मोरवाल —227
सुखद स्मृतियों में गोपाल राय — डॉ. श्रीनारायण प्रसाद सिंह—232

साक्षात्कार :

डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार (समीक्षा से साभार) — डॉ. पूनम सिन्हा —236
प्रो. सत्यकाम का साक्षात्कार : — डॉ. पूनम सिन्हा —243
डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — डॉ. सुनीता गुप्ता —258
डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — डॉ. पूनम सिन्हा, डॉ. माधव कुमार —263
अरुणकमल का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — विनीता कुमारी —268
प्रतिवेदन —271

हिन्दी कहानी का इतिहास-2 : साहित्य भी इतिहास भी

–पूनम सिन्हा

हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में गोपाल राय का योगदान महत्त्वपूर्ण है। साहित्येतिहास-लेखन के रूप में 2002 में प्रकाशित इनका 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास' अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इनकी पुस्तक 'हिन्दी कहानी का इतिहास' प्रथम भाग 2008 में प्रकाशित हो चुका है, जिसमें 1950 तक की हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा वर्णित है। समीक्ष्य पुस्तक 'हिन्दी कहानी का इतिहास-2' में 1951 से 1975 तक की कहानियों का इतिहास प्रस्तुत है। साहित्येतिहास-लेखन का कार्य अत्यंत दुरूह एवं उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। अत: इस क्षेत्र में साहित्यकार प्रवेश नहीं करना चाहते हैं। 'समीक्षा' (अक्टूबर-दिसम्बर 2008) के संपादकीय में डॉ० गोपाल राय ने लिखा है, 'पर यह काम बहुत कठिन है, यह मैं हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने के क्रम में समझ रहा हूँ और मुझे लगता है कि इस कठिनाई का सामना न कर पाने की विवशता ने ही हिन्दी विद्वानों को इतिहास-लेखन की अनुपयोगिता का फतवा देने को बाध्य किया है।'

समीक्ष्य पुस्तक में नए-पुराने लगभग 125 कहानीकारों का विवेचन तत्कालीन परिस्थितियों के बीच रखकर किया गया है। जिन कहानीकारों की रचनाएँ उपलब्ध नहीं हो पाई हैं, उनका भी नामोल्लेख अवश्य हुआ है। सामग्री संचयन अत्यंत कठिन है, क्योंकि उसकी सुरक्षा की कोई मुकम्मल सरकारी व्यवस्था तो है नहीं। साहित्यिक आलोचना में कृतियों का अध्ययन उनके कलात्मक गुण-दोष के आधार पर कर सकते हैं, किन्तु साहित्येतिहास लेखन में साहित्य की किसी विधा को हम उसे उसके काल और परिवेश की सापेक्षिकता में देखते हैं। 'किताब पढ़ने के पहले' शीर्षक भूमिका में डॉ० राय का कथन है, 'साहित्यिक विधाओं में कहानी, कदाचित्, अपने समय के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील होती है।' अत: इस पुस्तक में स्वतंत्रता प्राप्ति के आसन्न अतीत एवं समकालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक

एवं शैक्षिक स्थितियों का स्पष्ट एवं प्रामाणिक आकलन प्रस्तुत है। 1951 से 1975 तक की कहानियों का विश्लेषण, विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत है–'विरासत पर एक नजर' (1951-1960), 'नया उन्मेष', 'परंपरा का विस्तार', (1961-1975), 'नई दिशा का अन्वेषण, 'नई पीढ़ी', 'कहानी-आंदोलन', 'सवांग भाषाओं में कहानी'। अंत में अनुक्रमणिका एवं संदर्भ ग्रंथ हैं। प्रत्येक अध्याय के अंत में भी संदर्भ है। प्रस्तुत तथ्यां की पुष्टि के लिए इसके अंतर्गत सांदर्भिक टिप्पणियों का बहुत प्रयोग है, जो कहानी संबंधी शोध एवं ऐतिहासिक गवेषणा की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है।

'विरासत पर एक नजर' (1951-1960) शीर्षक अध्याय में तत्कालीन आर्थिक स्थिति का आकलन कृषि एवं उद्योगों के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। शिक्षा एवं स्त्री की दशा पर भी विमर्श है। ये सारे विमर्श विपिन चन्द्रा, मृदुला मुकर्जी, आदित्य मुकर्जी एवं पवन के. वर्मा आदि इतिहासकारों एवं समाजशास्त्रियों के हवाले से प्रस्तुत हैं। डॉ० राय कहते हैं, 'इस प्रकार 1950 के दशक में हिन्दी कहानी का जो नया उन्मेष दिखाई पड़ता है, वह कोई आकस्मिक परिघटना नहीं थी। उसके बीज 1951 के दशक में जो राजनीतिक-आर्थिक परिस्थितियाँ पैदा हुईं, उनके कारण ये बीज अंकुरित होकर तेजी से पल्लवित हो गए। इस दशक के लगभग अंत में कुछ कहानीकारों ने नई कहानी के नाम पर जो आंदोलन खड़ा किया, उसके मूल में उनकी अपने को 'विशिष्ट' मनवाने की महत्त्वाकांक्षा थी।' इस कथन की अंतिम पंक्ति से कुछ लोगों को ऐतराज हो सकता है, किन्तु समूची पुस्तक में लेखक ने अपने मंतव्य बिना लाग-लपेट के व्यक्त किए हैं। विस्मृति के अंधकार में पड़े हुए कुछ कहानीकारों का उत्खनन भी डॉ० राय ने किया है, जैसे चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, राजेन्द्र किशोर आदि।

'नया उन्मेष' शीर्षक अध्याय में डॉ० राय ने विभिन्न कहानीकारों की चर्चा तत्कालीन परिस्थितियों, वैयक्तिक संदर्भों एवं उनकी कहानियों के कथ्य एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य के विश्लेषण के साथ की है। डॉ० राय के द्वारा नगर एवं ग्राम-कथा के विश्लेषण में तद्विषयक परिस्थितियां एवं प्रवृत्तियों के साम्य-वैषम्य भी उदाहृत हैं। गोपाल राय अमरकांत को निर्विवाद रूप से छठे दशक का सर्वश्रेष्ठ कहानीकार मानते हैं। निर्मल वर्मा की कहानियों के संदर्भ में वे डॉ० नामवर सिंह के अधिकांश मंतव्यों से इत्तफाक नहीं रखते हैं। उनका मानना है कि 'निर्मल वर्मा की कहानियां का व्यक्ति समाज का अंग होते हुए भी प्राय: असंपृक्त होता है।'

[illegible]

... के बीच ... कहानी के [illegible] का समझना संभव है नहीं ... इस अवधि में कृषि के स्थान पर औद्योगिक विकास का [illegible] ... भ्रष्टाचार ... लगा. इसके कारण मध्य वर्ग का दोहरा चरित्र ... अपने लाभ के सिद्धांतों से समझौता और दूसरों के लिए ... की दुहाई ... के. वर्मा के अनुसार 'यह अंतर्विरोध और पाखंड मध्यवर्गीय चरित्र की पहचान बन गया।' इसी अवधि में भारत ने तीन-तीन युद्ध झेले। हिन्दी कहानीकार इन सारी स्थितियों से प्रभावित हो रहे थे। इस अवधि की कहानियों में मोह-भंग एवं निराशा के स्वर मुख्य हैं। कहानियों में स्त्री-नियति, भ्रष्टाचार एवं मध्यवर्गीय परिवारों में रिश्तों के छीजते जाने की वास्तविकताओं का वर्णन केन्द्रस्थ था। इस काल में कहानीकारों की कई पीढ़ियाँ सक्रिय रहीं।

समीक्ष्य पुस्तक में गोपाल राय इतिहासकार से आलोचक एवं आलोचक से इतिहासकार की भूमिका में निरंतर आवाजाही करते हैं। वे बीच-बीच में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी स्थितियों का पर्यवेक्षण करते हैं। 1959 में कमलेश्वर इलाहाबाद से महानगर दिल्ली में भारतीय दूरदर्शन की सेवा में नियुक्त होकर आए थे। राजेन्द्र यादव भी आगरा जैसे छोटे शहर से कलकत्ता, फिर दिल्ली आए थे। इस स्थिति से भी कहानी अपने कथ्य एवं शिल्प में प्रभावित हो रही थी।

कोई भी साहित्यिक परंपरा जब रूढ़िग्रस्त हो जाती है, तो वह नई परंपरा को जन्म देने का कारण बनती है। 'नई दिशा का अन्वेषण' शीर्षक अध्याय की आरंभिक पंक्तियाँ हैं, "छठे दशक के कुछ कहानीकारों ने सातवें दशक में, पहले से चली आती कहानी-परंपरा से नाता तोड़कर अपने कथ्य और शिल्प में नयापन लाने का प्रयास किया। इनमें से कुछ कहानीकार ऐसे भी हैं, जिन्होंने पूर्ववर्ती परंपरा में अपने विकास की संभावना न देखकर नई शुरुआत की पहल की।" गोपाल राय कहानियों के संदर्भ में अन्य आलोचकों के मंतव्यों को बीच बीच में प्रकट करते हुए अपनी निष्कर्षात्मक टिप्पणी देते हैं। डॉ० राय के अनुसार कहानी में तीन बातें आवश्यक हैं: समय

से संवाद, संवेदनात्मक तीव्रता के क्षण और संप्रेषणीयता।

डॉ० राय कहानी के कथ्य एवं शिल्प को लेकर किसी किसी कहानीकार को पछीटते भी खूब हैं। कृष्ण बलदेव वैद की कहानियों पर उनकी टिप्पणी द्रष्टव्य है, 'वैद के पात्र खाते कम और पीते अधिक हैं उनका कोई पात्र ऐसा नहीं, जो शराब या सिगरेट न पीता हो। वे कुछ शारीरिक काम नहीं करते; अधिक से अधिक भीख माँगते हैं (कुछ पात्र), उनका काम रोना, हँसना (कभी-कभी) उदास होना, खीझना, चिढ़ना-कुढ़ना ऊबना, सेक्सी हरकतें करना, औरतों को चूमना, आलिंगन करना, किसी को मार डालने की इच्छा करना, पर मारना नहीं, सपने देखना, दिवास्वप्न में डूबना, मानसिक रति करना, चलते हुए सोचते रहना, पीते हुए भी सोचते रहना, 'जेहनी बदकारी का लुत्फ उठाना' आदि है। पात्रों को अपनी माँ और बहन के अलावा (गनीमत है) सभी औरतें पसंद आती हैं। किसी भी पात्र को अपनी बीबी पसंद नहीं आती।' डॉ० राय द्वारा प्रयुक्त सूत्र वाक्य भी ध्यान खींचते हैं। यशपाल एवं जैनेन्द्र के विषय में उनका सूत्र वाक्य द्रष्टव्य है, "जब कहानीकार की कथा-संवेदना कमजोर होती है तो वह कथन की कारीगरी से उसकी क्षतिपूर्ति का प्रयास करता है।" कवियों द्वारा लिखित अधिकांश कहानियों में डॉ० राय संप्रेषणीयता का अभाव देखते हैं। श्रीकांत वर्मा की कहानियों का विश्लेषण करते हुए वे कहते हैं, "अपने व्यक्तिगत अनुभव को युग सत्य के रूप में प्रस्तुत करना एक प्रकार का पाखंड है।" समीक्ष्य पुस्तक में तुलनात्मक आलोचना के भी उत्तम उदाहरण मिलते हैं।

'नई पीढ़ी' एवं 'कहानी-आंदोलन' शीर्षक अध्यायों में मुख्य रूप से साठोत्तरी पीढ़ी की कहानियों एवं उनसे संबद्ध आंदोलनों का विश्लेषण है। डॉ० राय के मतानुसार 'हिन्दी कहानी के इतिहास' में 1961 का दशक एक विस्फोटक के रूप में सामने आता है। 1960 के लगभग 'नई कहानी' की अवधारणा ने प्रखर आंदोलन का रूप धारण कर लिया था, जिसमें कहानीकारों के साथ समकालीन आलोचक भी हिस्सा ले रहे थे। कुछ युवा कहानीकार भी थे, जिन्होंने 1959-61 के आसपास कहानी-लेखन का आरंभ किया था, पर जो महसूस कर रहे थे कि उन्हें पुरानी पीढ़ी द्वारा उचित मान्यता नहीं मिल रही है। इस समय उनकी वही स्थिति थी, जो 1950-51 में राजेन्द यादव, कमलेश्वर, शिवप्रसाद सिंह, उषा प्रियंवदा, अमरकांत, मार्कण्डेय की थी। प्रयोगधर्मी कहानियों का प्रचलन तेजी से बढ़ा। यह प्रयोगधर्मिता रमेश उपाध्याय, ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, रवीन्द्र कालिया, काशीनाथ सिंह, गंगा

प्रसाद निराला में भी है। [illegible]
नहीं, कहानी आंदोलनों में [illegible]
है विशेषकर 'कहानी' 'नई कहानी' [illegible]
[illegible] अपने संपादन काल में इन दोनों पत्रिकाओं के माध्यम से [illegible]
महत्वपूर्ण मुद्दे [illegible] 1960-61 के बाद के [illegible]
के लिए 'सचेतन कहानी', 'समांतर कहानी' 'अकहानी' [illegible]
कहानी', आदि संज्ञाओं का प्रयोग किया। कुछ [illegible] के
नाम पर कथ्य को प्रमुखता न देकर शिल्प की [illegible]

समीक्ष्य पुस्तक के अंतिम अध्याय में हिन्दी की [illegible] की कहानियों के इतिहास पर विचार किया गया है। हिन्दी शब्द के अर्थ और क्षेत्र-विस्तार को लेकर विवाद रहा है। शिवदान सिंह चौहान के अनुसार 'पंजाबी, राजस्थानी, मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, [illegible] कुमाऊंनी, डोंगरी, गढ़वाली आदि और चाहे जो हों, पर हिन्दी (खड़ी बोली) नहीं हैं। हिन्दी-उर्दू-विवाद भी पुराना है। यह विवाद सर सैयद अहमद खाँ के नेतृत्व में 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में तूल पकड़ चुका था। 'सवांग भाषाओं में कहानी' शीर्षक अध्याय में उर्दू, भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी भाषा की कहानियों के विकास पर विचार हुआ है। हिन्दी कहानी के इतिहास-लेखन में इन भाषाओं के इतिहास को शामिल करने के औचित्य पर डॉ० राय का कहना है कि 'मेरी मान्यता है कि इन भाषाओं के स्वतंत्र अस्तित्व को चुनौती दिए बिना ही इनके साहित्य को हिन्दी साहित्य के इतिहास में शामिल किया जाना चाहिए। इसके दो फायदे होंगे। यदि एक तरफ इनके आपसी अलगाव का भाव दूर होगा, तो दूसरी तरफ इनके साहित्य की तुलनात्मक, वैचारिक और सांस्कृतिक चेतना का पता लगेगा।' सिर्फ हिन्दी की 'सवांग' भाषाओं की कहानियों की बात नहीं है, सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि लगभग एक समय में उनमें कमोबेश एक सी प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। इसका सूत्र हम भारत की आंतरिक एकता से जोड़ सकते हैं।

डॉ० राय ने शिविरबद्धता एवं खेमेबाजी से अलग रहकर अपना लेखन कार्य किया है। पुस्तक में वैचारिक टकराहट की गूंज है। मुख्तसर इतना है कि डॉ० राय ने कहानी में संवेदना के क्षण एवं शिल्प की सहजता को महत्त्व दिया है, आरोपित विचारों एवं चमत्कारी शिल्प को नहीं। अनजाने ही सही, कोई भी साहित्येतिहास लेखक पूर्वग्रह से मुक्त नहीं होता। आचार्य

रामचन्द्र शुक्ल भी इसके अपवाद नहीं थे और न ही डॉ० गोपाल राय।

पुस्तक में एक जगह प्रेमचंद की कहानी 'सद्‌गति' के पात्र पंडितजी के द्वारा मरी हुई गाय को बाहर ले जाने का जिक्र है, उस कहानी में पंडित जी मरी हुई गाय को नहीं, बल्कि दुखी चमार के शव को बाहर ले जाते हैं। पुस्तक में कहीं-कहीं विचारों की आवृत्ति दिखती है; कुछ कहानीकारों की व्याप्ति एक से अधिक कालखंड में होने के कारण आवृत्ति से बचना मुश्किल था।

रेनेवेलेक-आस्टिनवारेन ने कहा है, "साहित्य के इतिहास को साहित्य भी होना चाहिए और इतिहास भी।" समीक्ष्य पुस्तक इन दोनों गुणों से युक्त है। उम्र के इस पड़ाव पर डॉ० राय द्वारा हिन्दी कहानी का इतिहास-लेखन जैसा श्रम साध्य एवं समय साध्य कार्य करना अत्यंत श्लाघनीय है। हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा से अवगत होने के लिए प्रत्येक शोधार्थी एवं विद्वान् के लिए समीक्ष्य पुस्तक से गुजरना अनिवार्य होगा।

104 लक्ष्मीनारायण नगर,
रामकृष्ण सेवाश्रम
मुजफ्फरपुर

❑